महिलाओं के प्रति होने वाली हिंसा और उनका समाधान

जब भी हम सरकार के साथ मिल कर या बाहर के संगठनों के साथ मिलकर कोई प्रोग्राम करते हैं तब ये दो विषयों महिला सशक्तिकरण और महिलाओं के प्रति होने वाली भिन्न-2 प्रकार की हिंसाये और उनके समाधान पर ज्यादा चर्चा होती है।आज 21वीं सदी में महिलाओं के दो रुप दिखाई देते हैं एक तरफ हम देखते हैं कि वो समाज के सभी क्षेत्रों में आगे बढ़ कर कार्य कर रही हैं। जो क्षेत्र उनके लिए पहले असम्मभव या जोखिम भरे माने जाते थे जैसे पुलिस है या सेना है या अन्तरिक्ष परन्तु आज वहाँ भी महिलाएं बहूत ही सफलता से कार्यरत हैं देखो सुनीता विलियम्स जो भारत की है भले वो आज अमेरिका में रहती है, उन्होंने अंतरिक्ष में सबसे लम्बे समय तक रहने का रिकार्ड बनाया तो ये उन की योग्यता को सिद्ध करता है कि यदि अवसर मिले तो वो पुरूषों से भी बेहतर प्रदर्शन कर सकती हैं। आज तक ऐसा नहीं हुआ था उसका कारण है कि उन्हें पहले अवसर नहीं दिये जाते थे। लेकिल जब समय ने उन को अवसर दिया तो वो सब कार्य कर रही हैं। दूसरी तरफ हम देखते हैं कि महिलाओं के प्रति होने वाले अपराध , अगर हम हर वर्ष का आंकडा देखें इन्टरनेट पर तो हम देखते है कि हर वर्ष आंकडा बढ़ता ही जाता है। जितना-2 समाज सभ्य और सुशिक्षित होता जा रहा है उतना महिलाओं के प्रति अपराध भी बढ़ते ही जा रहे हैं क्यों?क्यों बढ़ते जा रहे हैं वो हम बाबा के बच्चे जानते हैं कि समय अब तमोप्रधान है वो अति की ओर जा रहा है काम, क्रोध, लोभ, मोह, अंहकार वो अपनी चरम सीमा पर है ओर वो अपना प्रभाव दिखाते हैं।भारतीय संस्कृति वो तो पुरूष प्रधान संस्कृति रही है जब से द्वापर युग शुरू हुआ तब से लेकर अब तक। तो ये शोषण अत्याचार ये हजारों सालों से यहां होता रहा है। और अब तो हम एक दम अति का रूप हम देख रहे हैं।

जो भी भिन्न प्रकार की हिंसायें, महिलाओं के प्रति होती हैं वो हम सब जानते हैं क्यों होती है क्योंकि कहीं ना कहीं हम सब ने भी भले थोड़े परसेन्ट में ही भोगा हुआ है ऐसे नहीं हम बिल्कुल सुरक्षित रहे हैं क्योंकि हम भी उसी समाज में रहतें हैं सबसे पहली हिंसा तो आजकल गर्भ में ही शुरू हो जाती है भ्रूण हत्या के रूप में क्योंकि आज विकसित टेक्नोलोजी के कारण ये सब हो रहा है और पहले के जमाने में कन्या शिशू हत्या होती थी क्योंकि पहले से पता नहीं चलता था कि बेटी होने वाली है या बेटा इसलिए मां- बाप इन्तजार करते थे शिशु जन्म तक। फिर जैसे ही पता चलता कन्या है तो उस समय ही मार देते थे तथा बाहर जाहिर भी नहीं होने देते थे कि वह जीवित पैदा हुई है। कई बार तो उसे लावारिस भी छोड़ देते थे कई बार आज तक भी हम यह सुनते हैं कि नवजात बच्ची पड़ी हुई मिली सड़क के किनारे, तो ये बहुत बड़ा अत्याचार हमारे यहां होता रहा है। देखो हमारी भारतीय संस्कृति में नारियों का पूजन भी आदिकाल से होता रहा है। साल में 2 बार देवियों के नवरात्रे मनाते हैं कितनी धूमधाम से उनकी पूजा करते हैं उपवास रखते हैं किसी भी अन्य देश में महिला की देवी के रूप में पूजा ना के बराबर होती है कहीं-कहीं जहाँ हिन्दू धर्म को मानने वाले लोग रहते हैं उन्ही देशो में थोड़ी बहुत पूजा होती है वरना अन्य देशों में तो ऐसे देवी का पूजन होता ही नहीं है। जितना सम्मान मिलता है महिलाओं को हमारे देश में उतना ही अपमान भी हमारे देश में ही मिला है महिलाओं को। अन्य देशों में कम सम्मान कम अपमान होता है आज जो कन्या भ्रूण हत्या की समस्या है हमारे देश में ज्वलंत समस्या है। इसके भी बहुत सारे कारण हैं कि क्यों कन्या भ्रूण हत्या होती है। हम सब जानते है हमारी ही सांस्कृतिक परम्परायें हैं। उसमें भी सबसे बड़ी सामाजिक कुरीति है दहेज। लड़की पैदा हुई उसकी परवरिश करनी है। पढ़ाना लिखाना है फिर उसकी शादी करनी है तो दहेज के रुप में मोटी रकम भी देनी होती है और फिर यहां तक ही बात समाप्त नही हो जाती बीच-बीच में त्यौहार आते हैं तो तब भी देना ही पड़ता है फिर जब मां बनने वाली तब देना होता है माना जीवन भर मां बाप को फर्ज पालन करना होता है। फिर दहेज के लोभी ऐसे हैं कि वो शादि के बाद भी समय प्रति समय कुछ ना कुछ डिमाण्ड रखते रहते हैं। मांगे पूरी न हो तो बहू को या तो पति अपनी पत्नी को प्रताड़ित करता रहता है। उसके

परिणाम भी हम जानते हैं। अगर मां- बाप सक्षम हैं तो जरूर वो खुश करते हैं कभी नहीं करते हैं अपनी तरफ से अपनी बच्ची के भविष्य के लिए। परन्तू यदि सक्षम नहीं हैं गरीब हैं तो कर्ज ले कर भी बेटी की शादी करते हैं। ये हम सब जानते हैं एक तो कर्ज लेकर शादी की उपर से फिर रोज-2 नई-नई मांगे तो मां-बाप काफी दब जाते हैं। यहां बेटी भी अपने मां बाप की हालत को समझती है तो वो भले ससुराल में कितना भी प्रताड़ित होती है ससुराल में, उसे ऐसे ऐसे शब्द कहे जाते हैं कि तेरे घर वालों ने दिया क्या है आदि-आदि ये हम सब जानते हैं फिर भी बिचारी सहती जाती है। मानसिक, शारीरिक रूप से अपमानित होती रहती है, पीड़ित होती रहती है। केवल पति द्वारा ही मार नहीं पड़ती, कई बार अन्य सदस्य भी उस पर हाथ उठाते हैं जब तक वो सहन कर सकती है तब तक वो सहन करती है ससुराल में और जब उसको लगता है अब ये सब मेरी सहन सीमा के परे है तो वो वापिस मायके में आती है। परन्तु शादी के बाद अब वो सम्मान वो सम्मान मायके में भी नहीं होता है। क्योंकि अब उसे उसका घर नहीं समझा जाता है। मां – बाप तो चलो फिर भी वो प्यार-सहयोग- सहारा या सांत्वना देते हैं परन्तु भाई - भाभी उसे उपेक्षित नजरों से देखते हैं उसे ये भी अन्दर अहसास होता है कि मेरे माता-पिता भले मुख से कुछ नहीं कह रहे हैं परन्तु कहीं न कहीं मेरा यहां रहना उन्हें भी अच्छा नहीं लग रहा है या उनके बहू-बेटे उनको भी अन्दर ही अन्दर टोका- टाकी करते रहते हैं। जिस कारण फिर वो वापस जाती है ससुराल में। अब यहां तो अब पहले से भी बतर व्यावहार किया जाता है तो तब वो बिचारी खुद ही परेशान हो कर सुसाईड कर लेती है या उन के द्वारा मार दी जाती है। इस प्रकार की घटनायें आज दिन तक भी हमारे देश में होती रहती हैं। कल ही किसी ने सुनाया कि एन.टी. रामाराव बेटी की शादी में काफी दहेज दिया गया था। शादी के बाद लड़का और उस का परिवार विदेश चला गया। विदेश का प्रभाव तो आप को पता ही है लड़के का वहां किसी से अफेयर हो गया। उस लड़की के पिता ने जो एक बहुत बड़ी कम्पनी का मालिक था उस लड़के को ऑफर दिया कि मैं तुम्हे कम्पनी का मालिक बना दूंगा। इस में लालच तथा उस लड़की के साथ प्रेम-प्रसंगों के कारण उसने अपनी पत्नी यानि एन.टी.रामाराव की बेटी को वापिस अपने घर मतलब मायके चेन्नई में भेज दिया। जिससे लड़की सब कुछ समझ चुकी थी उसने सुसाईड कर ली। देखो दो परिवारों पर कितना इसका दुष्प्रभाव पड़ा। लड़की के माता- पिता तो बेचारे बहुत ही दु:खी हैं बड़े ही मानसिक वेदना का अनुभव कर रहें हैं। अत: मेरे कहने का मतलब है कि आज भी इस तरह की परिस्थितियां हमारे भारतीय समाज में महिलाओं के सामने आती रहती हैं। तो कन्या भ्रुण हत्या के पीछे दहेज बहुत बड़ा कारण है और दूसरा भी एक बड़ा कारण है कि हमारे यह माना जाता है कि बेटा वंश चलायेगा, बेटा ही बुढापे का सहारा है, बेटा ही मुख को अग्नि देगा तो ही उनकी मुक्ति होगी। बेटे ने चिता को अग्नि नहीं तो मोक्ष नहीं मिलेगा। ये कुछ मान्यतायें हैं यहां पर और इसके लिये बेटे का इंतजार होता है। पहले जब इतनी एडवांस टेक्नोलोजी नहीं थी तो बेटे के इंतजार में बेटियों की लाईन लग जाती थी। बेटे के इन्तजार में 7-7 बेटियां भी हो जाती थी हमारे बड़े दादी ने एक बार सुनाया कि वो चार बहनें हैं तथा जब उनका जन्म हुआ तो उनसे बड़ी तीन बहने थी। चौथे नम्बर पर दादी जी थे दादी जी ने सुनाया कि उनके जन्म पर उनकी मां बहुत रो रही थी तो दादी जी के पिता जी जो कि एक बहुत अच्छे ज्योतिषी थे, उन्होने दादी जी की जन्मपत्री देख कर मां को समझाया की तू रो क्यों रही हो । ये मेरी बेटी तो पूरे विश्व में हमारा नाम रोशन करेगी ये तो श्री कृष्ण की मीरा है। इस प्रकार समझा कर मां को चुप किया। बाद में तो हम जानते है कैसे दादी जी समर्पित होकर बाबा का नाम सारे विश्व में रोशन किया।

अत: हम देखते हैं कि जिनको बेटा नहीं था लेकिन बेटियों ने मां बाप का नाम रोशन कर दिखाया ऐसी ही महान विशेष हस्तियों में दादी जी का नाम शीर्ष पर है। ऐसे ही इन्दरा गांधी जी को देखो वो भी नेहरु की इकलौती बेटी थी। किस प्रकार उसने लम्बे समय तक प्रधानमंत्री रहते हुए देश को कुशल नेतृत्व दिया। महात्मा गांधी जी को देखो उनके तो चार बेटे हैं। फिर भी कौन उन्हे जानता

है। गांधी जी का नाम केवल उनके अपने ही कार्यो से अब तक आदर से लिया जाता है। उनके बेटों के नाम से नहीं अत: ये कोई ठोस आधार नहीं कि बेटे ही होगें तो नाम बाला होगा बेटियों से नहीं अत: वंश व्यक्ति के श्रेष्ठ कर्मों से चलता है ना कि बेटों से ।

आज कई लोग अनुभव कर रहे हैं कि बेटे बुढ़ापे का सहारा भी नहीं बनते हैं आज तो हालात ऐसी है कि पराये घर में होते भी बेटी मां-बाप का ज्यादा ध्यान रख देती है पहले तो ये कहते थे कि बेटी पराये घर का धन होता है शादी के बाद परायी हो जायेगी पर आज स्थिति विपरित हो गई है आज का बेटा पराये घर का धन बन जाता है मां बाप के लिए। जब ऐसी -2 समस्याओं से ग्रस्त भाई-बहने हमारे पास आते हैं तब हमें थोड़ा इन बातों को समझना पड़ता है उन्हे समाधान देना पड़ता है अधिकतर अन्दर ही अन्दर यह सब चलता रहता है परिवारों में बाहर इन बातों को कई बार नहीं करते हैं क्योंकि सोचते हैं हमारी बदनामी हो जायेगी या हमारी सामाजिक सुरक्षा ही समाप्त हो जायेगी। पुलिस या कानून की शरण में भी लोग नहीं जाते हैं । हांलाकि सरकार ने हर स्तर पर कानून बनाये हैं। महिलाओं की सुरक्षा के लिए भी कई प्रकार के कानून बने हैं। कानून की मदद लेने से यही सोचते है कि कही हमारे स्टैप लेने से हमें घर से ही बाहर न कर दिया जाये फिर हमारा क्या होगा। क्योंकि हम तो पूरी तरह इन पर निर्भर हैं। हमारी आर्थिक सामाजिक सुरक्षा भी चली जायेगी तथा बदनामी होगी वो अलग। तो इसी कारण बहुत प्रत्यक्ष रूप से ये सब चीजें समाज में बाहर नहीं आ पाती हैं। कई बार लोग इन बातों पर बात करने में भी संकोच करते हैं खुले में ये बाते नहीं हो पाते पीड़ित शोषित मातायें-बहने।

तीसरे प्रकार की जो हिंसा होती है वो है घरेलू हिंसा। ये हिंसा ज्यादातर पुरुष करते हैं जो किसी ना किसी व्यसन से ग्रस्त होते हैं जैसे शराब, अफिम-गांजा या कई प्रकार के ड्रग्स आदि या कई लोग जूआ आदि खेलते हैं इस कारण । ये हिंसा ज्यादातर लोअर क्लास या मिडिल क्लास फैमिली में होती हैं। खास कर गांव व कस्बों में घरेलू हिंसा ज्यादा होती है। उसमें स्त्री को बहुत सहन करना पड़ता है। क्योंकि पति व्यसन में ही अपनी ज्यादातर कमाई को उड़ा देता है पत्नी को फिर जैसे तैसे करके घर को चलाना पड़ता है। एक तो पति का अत्याचार सहन करें फिर काम करके पैसे भी कमाये घर-परिवार बच्चों की भी देखभाल करें। घर परिवार का माहौल भी इससे फिर बहुत बिगड़ जाता है

एक बार एक बहन मेरे पास आई तो बता रही थी कि उसका पति शराब बहुत पीता है। घर में आकर सब को रोज रोज तंग करता है फिर मुख से यदि एक शब्द भी निकल जाये तो जैसे आफत ही आ जाती है। 2-4 थपड़ तो पड़ते ही हैं। रोज-2 बुरी तरह से मार खाकर भी मैं घर नहीं छोड़ती हुँ बच्चों के कारण। क्योंकि सोचती हूँ। कि नौकरी करुं पर इतनी पढ़ी- लिखी नहीं हूँ। इस प्रकार उसका सारा समाचार सुनने के बाद मैने उसे राय दी की आप सेवाकेंद्र पर जाकर 7 दिन का कोर्स करो राजयोग सीखो। तथा ज्ञान के आधार पर शुभ-भावना रखो उस आत्मा के प्रति। क्योंकि ये सब कर्मों का हिसाब- किताब है आपका उसके प्रति। उसके लिए उस आत्मा के प्रति गहरी शुभ-भावना एंव शांति की शक्ति की जरूरत है। इस तरह से उस को समाझाकर भेजा तो उसने फिर वहाँ जाकर कोर्स किया योग सीखा। जिससे उसके खुद के अन्दर भी सहनशक्ति बढ़ी वो जो पहले सामना करती थी वो बंद कर दिया। शुभ- भावना का प्रयोग किया। साथ-2 ये पक्का किया की ये जो कुछ भी कहे पर मुझे एक शब्द भी नहीं कहना है। ये अपने कर्मों के लिए खुद जिम्मेदार हैं। मैं अपने कर्मो के प्रति जिम्मेदार हूँ इससे जब वो एकदम शांत रहने लगी तो उसके पति को आश्चर्य लगने लगा कि ये अब कुछ बोलती क्यों नहीं। उसने पता लगाया कि ये आजकल ब्रह्माकुमारीज में जाती है जिस कारण इसके अंदर ये चेंज आई है ऐसे धीरे-2 तीन- चार महीने गुजर गये अब पति भी मारपीट नहीं करता था पर शराब तो अब भी पीता था पैसे तो अभी भी वेस्ट जा ही रहे थे तो ऐसे सेवाकेंद्र पर प्रोग्राम था एक दिन तो उस बहन ने पति को बोला आज सेवाकेंद्र पर प्रोग्राम है बहनजी ने

आप को निमंत्रण दिया है बड़े प्यार से कहा भले आप ज्यादा देर नहीं बैठना पर आप को निमंत्रण दिया है थोड़ा देर ही सही चलो। तो वो भी प्रोग्राम में गया। बड़े ध्यान से प्रोग्राम अटेण्ड किया। अच्छा भी लगा। फिर बहनें तो बहनें हैं वो तो समझाने करने में बहुत होशियार होती हैं उन्होने उसे 7 दिन के कोर्स के लिए तैयार किया ओर उस भाई ने सात दिन का कोर्स किया। फिर उसकी धीरे-2 शराब की आदत भी कम होने लगी। उससे प्रोमिस करवाया की रोज आधा घंटा टाईम निकाल कर यहां आकर मुरली सुननी है। इस तरह एक महिने के अन्दर उसकी शराब की आदत पूरी तरह से चेंज हो गई।

तो ये जो घरेलू हिंसा के मामले हैं इनकी शुरूआत बचपन में ही शुरु होने लगती है। क्योंकि बहुत कुछ करके बच्चे का भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि उसकी मां ने उसे क्या-2 संस्कार दिये हैं बचपन में। ज्यादातर घरों में मां ही बच्चे के मन में भाई व बहन का भेदभाव भर देती है। उसके मन में महिलाओं के प्रति सम्मान सहयोग का भाव नहीं भरती। अपनी लड़की को गौण स्थान देती है बेटे के समक्ष। जिससे वो बचपन से ही सीख लेता है कि नारियाँ – पुरुषों के मुकाबले निम्नवर्ग की है। वो शुरु से ही अपने को सुपीरियर व बहन को जूनियर समझने लगता है। तो बचपन में उसमें पनपी यह वृति शादी के बाद महिला को कमतर आंकने के कारण, घरेलू हिंसा में तब्दील हो जाती है। या वो फिर अपने पिता को देखते हैं कि हमारा पिता भी कभी-2 मां को मार देता है तो बड़ा होकर उसे भी लगने लगता है कि स्त्री पर हाथ उठाना से तो पुरुषों को छूट दे रखी है या ये तो उन का जन्म सिद्ध अधिकार है। ये तो उन्हे वर्सा मिला हुआ है अपने बाप से।

कन्या भ्रूण हत्या ये सिर्फ भारत की ही प्रोब्लम है परन्तू घरेलू हिंसा से तो पूरे विश्व में चलता है। क्योंकि शराब पीना , नशा करना ये पूरे विश्व में चलता है। तथा इसमें पुरुष अग्रणी हैं।तो जब पुरुष नशा करते हैं तो नियंत्रण से बाहर हो जाते हैं वैसे भी नशा विवेक को समाप्त कर देता है अत: व्यवहार, मारपीट या दुष्कर्म की घटनायें ज्यादा बढ़ रहीं हैं ये भी नशे के कारण ज्यादा बढ़ रही हैं । सामान्य तय: मनुष्य में विवेक होता है परन्तु नशे में विवेक खत्म होने से उन्हे ये पता ही नहीं चलता की हम गल्त कर रहे हैं या ठिक हम किस हद तक जा रहे हैं हम अपनी लिमिट क्रास कर रहे हैं और इस के कारण घिनौनी वारदातें हो रही हैं आये दिन। आप अखबार उठायें तो कोई दिन ऐसा नहीं होगा कि जो अखबारमें ऐसा समाचार न छपता हो । ना सिर्फ इस रूप में बल्कि एक दूसरा रूप जिसे छेड़छाड़ कहा जाता है बस में, ट्रेन में राह चलती लड़कियों के साथ ऐसी घटनाये रोज घटती हैं बड़ा ही असुरक्षा का माहौल बनता जा रहा है महिलाओं के लिए। कुछ सालों की एक घटना है कि एक लड़की के साथ कुछ लड़के छेड़छाड़ कर रहे थे तो वो डर कर भागने लगी तो गिर गयी गिरने से उसके सिर पर इतनी चोट आई कि अस्पताल जाते जाते उसने शरीर छोड़ दिया। तो ये भी एक प्रकार की हिंसा है। बाबा ने तो हमें पहले ही समझा दिया है कि काम विकार पहले नम्बर की हिंसा है। जब काम विकार उत्पन्न होता है तो उसके फलस्वरूप जो भी क्रियायें -चेष्टायें होती हैं वो सब अत्याचार का रूप हैं।

आज तो इस काम विकराल रूप से नन्ही-2 बालिकाएं भी सुरक्षित नहीं हैं। अपने ही नजदिकी परिवार वालों से, नजदिकी रिश्तेदारों एवं अडौसी-पडौसी के द्वारा बहुत ही बाल यौन शोषण होते हुए देखा जा रहा है। बाल अपराधों का ग्राफ आज के सभ्य एवं शिक्षित कहे जाने वाले समाज में दिनो दिन बढ़ता जा रहा है। भाई पिता जिन्हें रक्षक माना जाता है आज तो कहीं-2 ये रक्षक भी भक्षक बनकर पवित्र एंव पाक रिश्तों की पवित्रता एवं मर्यादा को तार-2 कर रहे हैं।

पिछले दिनों हमने नारी सशक्तिकरण अभियान निकाला था तो उसमें हमारे साथ एक अमेरिकन बहन भी थी जो वहाँ पर स्त्री रोग विशेषज्ञ भी है उस बहन ने बचपन का एक प्रसंग सुनाया था कि वह जब बहुत छोटी थी तो उसे इन बातों का बिलकूल भी ज्ञान नहीं

था। तो उसके बहुत ही क्लोज के रिश्ते के भाई ने उसके साथ छेड़खानी की तो उसे भले समझ में नहीं थी कि यह कुछ गलत कर रहा है पर अन्दर से उसे वैसे ही ख्याल आया कि इसकी हरकत तो कुछ ठिक नहीं है उसके बाल मन ने सचेत किया कि यह सब ठिक नहीं है। तो उसने जब सहज बाल सुलभ स्वभाव से अपनी मां को वह सब सुनाया तो उसकी मां ने उसे कहा कि ठीक है मुझे सुनाया पर अन्य किसी को यह सब नहीं सुनाना माना समाज में माता-पिता भी इन बातों को दबा देते हैं जिससे वो पीड़ित कन्या कुण्ठा में चली जाती है। कई बार तो छोटेपन से ही वह अवसाद ग्रस्त हो जाती है उसका मनोबल दब जाता है तथा उस का उचित मानसिक विकास न होने के कारण वो एक सशक्त व जुझारू युवा नहीं बन पाती। तथा उसका विश्वास भी डगमगा जाता है। अत: हमारा सुझाव है माता-पिता से खासकर माताओं से कि वो इन सब बातों को हल्के में ना लें। वैसे तो आजकल ज्यादातर मां- बाप बच्चियों को असुरक्षित ही महसुस करते हैं। कहीं भी कभी भी उन्हें अकेला नहीं छोड़ते क्योंकि कई बार तो बच्चों का अपहरण भी कर लेते हैं। तथा अपहरण्कर्ता उन्हे बेच भी देते हैं। कई देशों में यह धन्धा चलता है। फिर इन बच्चियों को अन्दर ही अन्दर ट्रासंपोर्ट करके सेक्स रैकेट में धकेल दिया जाता है जहाँ उन से वेश्यावृति कराई जाती है। तथा पूरी तरह उनका जीवन नारकीय बना दी जाता है। तो बताइये इससे बड़ी ओर क्या हिंसा हो सकती है। उसके सही जीवन जीने के अधिकार को छीनकर उससे जोर जबरदस्ती पशुता से भी नीचे का जीवन जीने पर मजबूर किया जाता है। संयुक्त राष्ट्र संघ तथा कई मानवाधिकार संगठनों में भी इस बात को मानव अधिकारों के उल्लंघन के रूप में उठाया जाता है।

हमने जो कन्या भ्रूण हत्या की बात की उसका दुष्परिणाम आज यह देखने में आ रहा है कि स्त्री पुरष लिंग अनुपात आज गड़बड़ा गया है 1000 पुरूषों में 931 स्त्रियां हैं तो कितना यह प्राकृतिक असंतुल हो गया है खासकर उतरी भारत के राज्यों हरियाणा, राजस्थान, उतरप्रदेश में सबसे ज्यादा कन्या भ्रुण हत्या होती हैं। ये सब बड़ा ही अन्डरग्राण्ड होता है क्योंकि कानून बना हुआ है सामने से कन्या भ्रूण हत्या नहीं कर सकते जितना-2 हम विकास की तरफ बढ़ रहे हैं उतना ही मानवता पतन की ओर जा रही है। कन्या भ्रुण हत्या के बारे में कई कानून बने हुए हैं 1994 में एक कानून अस्तित्व में आया कि आप बच्चे का लिंग निर्धारण नहीं कर सकते (जांच नहीं कर सकते) कि लड़का है या लड़की यदि निर्धारण करते हुए पाया गया तो डॉक्टर तथा कराने वाले दोनो को अर्थ दण्ड सहित या सजा भुगतनी पड़ती है।

एक ओर हिंसा भारतीय समाज में होती है वो है विधवाओं को दी जाने वाली मानसिक प्रताड़ना। समाज में जहाँ भी जाती है खास ग्रामीण आंचलो में उसे अच्छी निगाहों से नहीं देखा जाता है। बड़ी ही हीन दृष्टि रखी जाती है उनके प्रति। कई बार तो कई अपमान जनक शब्द भी उन्हें सुनने पड़ते हैं। यदि किसी लड़की को शिक्षा से वंचित रखा जाता है तो यह भी उसके साथ सरासर एक अन्याय है, अपराध है। गांवों में तो पांचवी-आठवी तक पढ़ा देते हैं फिर सोचते हैं कि आगे पढ़कर इसको क्या करना है। वैसे भी ज्यादा पढ़-लिख जायेगी तो इसके लिए वर ढूंढने में भी हमें दिक्कत होगी ऐसा भी कई घरों में सोचतें हैं। फिर आजकल तो ये भी है कि पढ़ी-लिखी लड़की के लिए अच्छा ही पढ़ा लिखा वर ढूंढना है तथा उसको फिर दहेज भी ज्यादा ही देना होता है इस कारण भी कई माता-पिता भी उँची शिक्षा देने से डरते हैं

लेकिन एक हम कहते हैं कि एक लड़का पढ़ता है तो बह सिर्फ अपने लिए पढ़ता है पर यदि एक बेटी पढ़ती है तो उसकी शिक्षा का लाभ दो परिवारों को मिलता है वह आने वाली कई पीढ़ी को सुसंस्कारित कर सकती है क्योंकि प्रथम शिक्षक या प्रथम गुरू मां ही होती है। उससे बच्चा ज्यादा सिखता है। अत: पढ़ी-लिखी होने के ये मतलब नहीं की नौकरी करें । अच्छी रीती से शिक्षित महिला अपने घर गृहस्थ को भी उसी तरह से चलाती है बच्चों की परवरिश भी उसी ढंग से देती है। इसी कारण कहने में आता है कि हर

सफल व कामयाब पुरुष के पीछे एक महिला का हाथ होता है। अत: हम जो भी सफल व्यक्तिव वर्तमान या पास्ट में देखते हैं उनके पीछे उनकी मां या पत्नी का बहुत योगदान होता है। महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानन्द, वीर शिवाजी या लाला लाजपत राय आदि अनेक महापुरुषों की यदि आप हिस्ट्री पढ़े तो पता चलता है कि उनके चरित्र को उतना श्रेष्ठ बनाने में उनकी मां का एक बड़ा ही विशेष रोल है। महात्मा गांधी जी ने अच्छे से स्वीकार किया है इस बात को उनकी एक किताब है सत्य के प्रति मेरे प्रयोग यह उनकी आत्मकथा है। मैने यह किताब पढ़ी है। इसमें उन्होने लिखा है कि मैं जब विदेश जा रहा था तो मेरी मां ने कहा था क्योंकि हम गुजराती थे हमारे समाज में मांसाहार- शराब ये सब निषेध था। मां को डर था कि कहीं मैं विदेश जा कर यह सब गल्त आदतें ना सीख लूं। साथ-2 वहां तो परस्त्री गमन भी आम बात थी। अत: मां ने मेरे से प्रतिज्ञा कराई तू वहां जाकर ये सब नहीं करेगा। मेरे प्रतिज्ञा करने पर मां ने मुझे विदेश जाने की अनमति दी। आगे उन्होने लिखा है कि विदेश में अध्ययन करते समय बहुत ऐसे अवसर आये जब मैं आसानी से दुर्व्यसनों का शिकार हो सकता था तथा कुसंग में आकर चरित्र भ्रष्ट हो सकता था। परन्तु मां से की गई प्रतिज्ञा ने मुझे हर बार बचाया। उनके द्वारा कहे गये वचनों से मुझे हर बार बचाया। उनके द्वारा कहे गये वचनों से मुझे हर बार सशक्त किया। यही वो चारित्रिक बल था जिसकी बुनियाद से मैंने भारत को आजाद करने का बीड़ा उठाया।

अत: मां से मिली सीख संस्कार बच्चे के जीवन में बड़ा ही अहम पार्ट प्ले करते हैं। भारत की प्रथम महिला आई.पी.एस जो कई उंचे पदों पर कार्यरत रही पुलिस विभाग में, उन्होंने देहली में एक कार्यक्रम के दौरान बताया कि वो जब सेवारत थी तो जब कभी भी कोई खुंखार अपराधी या बाल अपराधी उनके समक्ष आते थे तो वो पहला सवाल उनसे पूछती थी कि क्या तुम्हारी मां ने तुम्हे बचपन में नारी सम्मान की शिक्षा नहीं दी थी या चारित्रिक व नैतिक मूल्यों की सीख नहीं दी थी तो अधिकतर यही बात सामने आई कि कहीं ना कहीं बाल्यकाल में उनकी मां ने बहुत बड़ी चुक की थी उनके स्वभाव संस्कार पर ध्यान न देकर। मां ने शुरू में उनके द्वारा हुई छोटी-2 गल्तियों को हमेशा छिपाया उनका पक्ष लिया जिस कारण गल्त आदत उनके अन्दर पनपती गई तथा समयान्तर में उस आदत ने विकराल धारण कर लिया जिसके परिणाम स्वरूप वो अपराध की, आतंक की दूनिया में शातिर अपराधी बन गये। अत: मां की बहुत बड़ी भूमिका है परन्तु एक मां अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा या संस्कार तब ही दे सकती जब वो खुद सुसंस्कारित होगी,शिक्षित होगी। अब यदि मां के ही संस्कार अच्छे नहीं है तो वो बच्चे को क्या सिखा सकती है।

बच्चा माहौल से बहुत कुछ सिखता है यदि परिवार में शांति का, प्रेम का, सहनशीलता का माहौल है तो बच्चे में भी यह गुण विकसित होने लगते हैं अगर बच्चा देखता है कि घर में मां-बाप की नहीं बनती उनमें मन-मुटाव रहता है या मां की उनकी देवरानी-जेठानी की या सास-बहू की नहीं बनती झगड़ा होता है या घर में सारा दिन चुगली चर्चा का माहौल है। इसकी- उसकी , तेरी-मेरी बातें सारा दिन चलती हैं तो उसके बाल मन पर इसका बड़ा प्रभाव पड़ता है। उसके जीवन में भी यही संस्कार जाने लगते हैं।

अत: यदि हम बच्चों का चरित्र उज्जवल बनाना चाहते हैं तो बचपन से ही ध्यान देना पड़ेगा। बच्चा है कच्ची मिट्टी की तरह के समान। जैसे कुम्हार कच्ची मिट्टी को अपने अनुसार तरह-2 के आकार में चीजें तैयार कर देता है ऐसे ही जब बच्चा मां-बाप के आंचल के साये तले है तब मां भी उसे जो बनाना चाहें बना सकती है जिस रूप में उसे बड़ा होकर देखना चाहे उसकी शुरुआत उसी समय कर सकती है कई अच्छे गुणों का बीजा रोपण करके उसके बाल व्यक्तित्व को ऐसा सुदृढ़ कर सकती है ताकि बड़ा होकर वो बच्चा मां बाप समाज या देश के लिए एक प्रतिभाशाली- गौरवमयी हस्ती बन सकता है।

जब हम ब्रह्माकुमारी बहने महिलाओं की पारिवारिक समस्याओं या उनके उपर होने वाली भिन्न-2 प्रकार की हिंसाओ के समाधान की बातें करतें हैं हम उन्हें आध्यात्मिक रूप से सशक्त करने की बातें करती हैं उनका नैतिक व चारित्रिक उत्थान की बात हो ये बात करते हैं इसके लिए वो नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों में सम्पन्न बने ये बात करते हैं सरकार या कई अन्य महिला संगठन या सामाजिक संगठन तो बात करते हैं हम इनका आर्थिक सशक्तिकरण करें,इनका सामाजिक सशक्तिकरण करें यानि इन्हें सामाजिक सुरक्षा प्रदान करें, राजनीति में इन की भागीदारी बढ़ायें तब महिलायें सशक्त होगीं तथा अपने उपर होने वाले अत्याचारों का सामना कर सकेगीं। परन्तू ये सब सशक्तिकरण करना ऐसे ही है जैसे हम किसी पेड़ की शाखायें काट रहे हैं। परन्तु समस्याओं का तना व जड़ यथावत् बनाये रखते हैं देखो भले ही आज आर्थिक रीति से महिलाओं को सशक्त बनाये जाने के लिए कई योजनायें सरकार ला रही है। कई नौकरीयों में भी उनके लिए आरक्षण है। उनकी सुरक्षा के लिए कठोर से कठोर कानून भी बनाये गये हैं ताकि उनके साथ होने वाली कई घिनौनी वारदाते बंद हो। परन्तु हम सभी देख रहे हैं कि इसके बावजूद भी समस्या जैस की तस बनी हुई है।अत: हम कहेगें इसके लिए जरूरत है नैतिक-आध्यात्मिक-मानवीय मूल्यों के संवर्धन की। आन्तरिक सशक्तिकरण की। केवल बाहरी रूप से कानून बनाने से यह सब नहीं रूकेगा।

आजकल महिलाओं को शारीरिक रूप से सशक्त बनाने के लिए कई लोग जूडो-कराटे सिखाते हैं तो क्या जुडो-कराटे से या उन्हें कोई हथियार आदि चलाने की ट्रेनिंग देकर कोई रिवाल्वर उनके पर्स में रहने से उनकी सुरक्षा पूरी तरह से हम कर पायेंगे? उससे ीी प्रामि आवश्यकता है हमारे भीतर की शक्तियों को विकास की। उसके लिए समझ चाहिए जो हमारे अन्दर आध्यात्मिक ज्ञान से विकसित होती है। उन्हें जब ये ज्ञान मिलता है कि हम आत्मा हैं, हम स्त्री-पुरुष नहीं हैं। क्योंकि आत्मा स्त्री-पुरुष नहीं होती है। आत्मा में दोनों ही संस्कार रहते हैं। जिन संस्कारों की प्रबलता होती है, उस अनुसार स्त्री या पुरुष का चोला मिलता है। हमारे ब्रेन के भी दो पार्ट हैं। एक मैसकुलिन पार्ट (पुरुष सम्बन्धी) है, एक फैमिनीन पार्ट (स्त्री सम्बन्धी) है।

मैसकुलिन पार्ट, जिसे ब्रेन का बायाँ हिस्सा कहते हैं वो बहुत ही लॉजिकल होता है तथा फैमिनीन पार्ट जो ब्रेन का दायाँ हिस्सा होता है, वो बहुत ही इमोशनल होता है। तब हम कहते हैं बाहर के कार्य जो ज़्यादा भाग-दौड़ या ज़्यादा ताकत वाले होते हैं वो पुरुषों का कार्य है तथा घरेलू कार्य वो महिलाएँ करें,,

अत: संस्कार दोनों ही हैं अन्दर। अत: जैसे ही यह समझ आ जाती है कि हम आत्मिक रूप से समान हैं। दैहिक रूप से भले ही अन्तर है। अत: यदि हम देह भान में, दैहिक दृष्टि-वृत्ति में रहते हैं तो विकारों की उत्पत्ति होती है। आत्मिक दृष्टि-वृत्ति से समानता का भाव, सहयोग का भाव, सम्मान का भाव अन्दर पैदा होने लगता है। जिससे भेदभाव पूर्ण व्यवहार, अनाचार, शोषण – ये सब कम होने लगता है।

अत: आध्यात्मिक ज्ञान आने से नारी के प्रति देवी रूप का भाव, पूज्या रूप का भाव अन्दर विकसित हो जाता है जिससे सहज ही सुरक्षा – पवित्रता के बल से होने लगती है। अत: यह परिवर्तन ही मूल परिवर्तन है। दहेज की समस्या भ्ज्ञी ज्ञान से ही मिटती है। ज्ञान जीवन में आ जाने से यह समझ आती है कि संतोष परम धन है, लोभ में लाभ नहीं है। सादगी, शीलता यही सच्चा सौन्दर्य है। अत: दहेज का लोभ नहीं होता है। अन्य सभी तो जल्दी-से-जल्दी अमीर होना चाहते हैं इसमें भी शादी का दहेज वो तो अनायास एक ही दिन में कितना मिल जाता है। इसलिए लोग बिना कुछ गिये-धरे इस प्रकार की धन की आश करते रहते हैं। देखते हैं कि सामने

वाला कितना ज्यादा से ज्यादा दे सकता है। जितना भी अधिकतम मिल जाये, वो बहुत अच्छा। अत: ज्ञान मिल जाने से इस प्रकार का लोभ सहज मिट जाता है।

बी.के. परिवारों में तो देखो कन्या-भ्रूण हत्या भी नहीं हो सकती, सवाल ही नहीं उठता। हमारे यहाँ तो कन्या को देवी, लक्ष्मी माना जाता है। बाबा तो कहे हैं – संगमयुग पर तो जितनी ज्यादा कुमारियाँ हों, उतना अच्छा। संगम पर सर्वश्रेष्ठ भाग्य देता है बाबा कुमारियों को। अत: बी.के. परिवारों में यह समस्या स्वत: ही समाप्त हो जाती है। घरेलू हिंसा भी समाप्त हो जाती है। क्योंकि नित्य प्रति राजयोग से, स्वधर्म में टिकने से शान्ति की शक्ति आ जाती है। व्यसन तो जड़ से ही समाप्त हो जाते हैं। हम 2-4 प्रैक्टिकल उदाहरण देकर समझा सकते हैं कि कैसे यहाँ आने वाले हजारों भाई-बहनें सहज भाव से हर प्रकार से निर्व्यसनी बन जाते हैं। अब व्यसन समाप्त हो जाने से आधी हिंसा तो अपने आप ही समाप्त हो जाती है। व्यसन से संस्कारों में प्रबलता आती है। वो छूट जाने से साथ-साथ जीवन में शान्ति आने से क्रोध का वो प्रबल रूप नहीं रहता कि मारपीट करें, गाली-गलौच करें। थोड़ा भी कुछ गलत बोल मुँह से यदि कभी निकल जाता है तो फौरन रियलाइज करके क्षमा माँग लेते हैं। माना रियलाइजेशन पावर बढ़ जाती है।

अत: आध्यात्मिकता ही हर समस्या का समाधान है। आध्यात्मिकता से हमारे जीवन में नैतिक मूल्य सहज आने लगते हैं। ज्ञान हमें यह पक्का कराता है कि हम अबला नहीं, सबला हैं। हम शिव-शक्ति हैं। इस तरह हम बता सकते हैं कि आज शक्ति-स्वरूप का इतना पूजन जो होता है, वह क्यों होता है। आप तो महिला दिवस पर भी भाषण करते होंगे तो बताते होंगे ना कि देखो, धन भाई कमाते हैं ज्यादातर, पर धन की देवी की नारी रूप में लक्ष्मी के रूप में पूजा होती है। धन लक्ष्मी से माँगते हैं। युद्ध के मैदान में तो देखो भाई जाते हैं, लेकिन शक्ति के रूप में पूजा दुर्गा माँ की करते हैं। शक्ति माँ दुर्गा से ही माँगते हैं। ऐसे ही विद्या के क्षेत्रों में बड़े-बड़े विद्वान तो पुरुष होते हैं, परन्तु विद्या देवी के रूप में पूजा करते हैं माँ सरस्वती की। विद्या उनसे माँगते हैं। तो ऐसा पूज्यनीय स्थान परमात्मा पुन: नारी को देने का कार्य कर रहे हैं। अब तो समय है जब हम अबलाओं या द्रौपदियों की पुकार सुनकर परमात्मा फिर से अवतरित हुए हैं और प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय की उन्होंने स्थापना की है, आप अच्छे से बता सकते हैं कि कैसे हमारे दादियाँ बड़े ही कुशलता से ईश्वरीय विश्व विद्यालय का संचालन कर रही हैं। उनके साथ-साथ सभी सेवाकेन्द्रों की बहनें बड़े ही अच्छे तरीके से सेवाकेन्द्रों का सुचारू रूप से संचालन कर रही हैं। ज्ञान का कलश भगवान ने कन्याओं-माताओं को दिया है,,

अत: ज्ञान के अनुकूल हम उन्हें समाधान बतायें। साथ-साथ उन्हें उनके स्वभान की, गरिमा की स्मृति दिला कर उनमें आत्म-विश्वास बढ़ायें। साथ-साथ छोटी-छोटी बच्चियों को बाल्यकाल से ही इस तरह की विपरीत परिस्थिति उत्पन्न होने पर वो क्या करें वो गाइड करना चाहिए। परिवार के बड़े लोगों के द्वारा। कई बार परिवार के सदस्यों द्वारा ही यौन-शोषण होता है तो उसमें भी परिवार कें बड़े सदस्यों को थोड़ी बहुत जानकारी अपने ही परिवार के ऐसे सदस्य के बारे में होती है। अत: उन्हें कभी भी अपनी छोटी बच्चियें को उनके साथ अकेले में या एकान्त में नहीं छोड़ना चाहिए। नहीं तो हमारी थोड़ी भी लापरवाही या अनदेखी कभी-कभी बड़े भारी अपाध को अंजाम दिलाने में मददगार साबित हो सकती है। जिसका खामियाजा हमें तथा पीड़ित बच्चे को जीवनपर्यन्त चुकाना पड़ता है। अत: बच्चों में यह संस्कार शुरू से ही डालें कि वो छोटी-सी हरकत किसी के द्वारा जो उनसे की जाती है, उसे वो खुले मन से, नि:संकोच होकर अपनी माँ व अन्य बड़ों को बता सकें।